आंकडा का अर्थशास्त्र

पिछले दिनो प्रतिष्ठित दैनिक अखबार ''पत्रिका'' के बारह अगस्त दो हजार तेरह क जबलपुर संस्करण मे मोटे–मोटे अक्षरो से शीर्षक देकर समाचार छपा।

''आर्थिक तंगी से एक तिहाई तनावग्रस्त डब्ल्यू एच ओ की रिपोर्ट,भारत मं सबसे ज्यादा लोग डिप्रेशन के शिकारः—दुनिया के अन्य देशों की तुलना में भारत में सबसे ज्यादा लोग डिपशन के शिकार हा गए है। देश की आबादी में 36 फोसदी लोग ऐसे है, जो गंभीर डिप्रेशन के मरीज बन चुके है। इनकी इस हालत के लिए वर्तमान जटिल परिस्थितियॉ जैसे महंगाई,आर्थिक तंगी, हिंसा,और सामाजिक समस्याऍ जिम्मेदार है।

विश्व स्वास्थ संगठन की हाल में जारी हुई एक सर्वेक्षण रिर्पोट इंवेस्टमेंट इन हेल्थ रिसर्च एंड डेवलपमेंट में ये चौंकाने वाले तथ्य सामने आए है। रिपोट बताती है कि डिप्रेशन ऐसी बोमारी है, जो आत्महत्या का कारण बनती है। एक अनुमान के अनुसार डिप्रेशन के 15 प्रतिशत रोगी आत्महत्या कर लेते है।

रिपोट बताती है कि केवल वयस्क ही नही, बल्कि बच्चे भी डिप्रेशन के शिकार हो रहे है और स्कूल जाने वाले बच्चों में डिप्रेशन का मामला लगातार बढ़ता जा रहा है। यही वजह है कि बच्चों में आत्महत्या की घटना पहले से बढ़ी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा 18 देशों में करीब 90 हजार लोगों पर किए गए सर्वेक्षण से पता चला कि भारत में सबसे ज्यादा डिप्रेशन के मरीज है।

संगठन के ऑकड़े बताते है कि दुनिया भर में 12.10 करोड़ लोग डिप्रेशन का शिकार होते है। जिसमें से 8.5 लाख लोग अपनी जान तक दे देते है। भारत में मध्यम आयु से ही लोग डिप्रेशन के शिकार हो जाते है। यहॉ डिप्रेशन के शिकार लोगो की औसत उम्र 32 साल के आसपास है। भारत में पुरुषों के मुकाबले महिलाओं में डिप्रेशन का प्रकोप दुगना है। भारत में आज डिप्रेशन दसवीं सबसे सामान्य बीमारी है। रिपोट में आशंका व्यक्त की गई है कि आने वाले समय में विकासशील देशों में डिप्रेशन विकलांगता का प्रमुख कारण बनने जा रहा है। ऐसा माना जा रहा है कि सन् 2010 तक हमारे देश में डिप्रेशन दूसरी सबसे आम बीमारी हो जाएगी।''

पिछले दिनों प्रतिदिन न्यूज चैनल ए टू जेड में शुक्रवार को मंहगाई विषय पर आयोजित एक वैचारिक बहस के अन्तर्गत प्रसिद्ध अर्थशास्त्री श्री एस.के. दत्त ने जोर देकर कहा कि प्रत्येक दस वर्षों में आम नागरिको की आय तो दो गुनी से भी कम ही बढ़ पाती है जबकि आम उपभोंक्ता वस्तुओं के मूल्य दस वषा में दस गुने तक बढ़ जाते है। पनल की बहस में मेरे द्वारा प्रतिवाद करने पर उन्होनें प्रमाण दिया कि आर बी. आई की रिपोट अनुसार भारत में पिछले पैंसठ वर्षों में खाद्यान्न वस्तुओं के मूल्य चार सौ गुने से भी ज्यादा बढ़ गये है। बहस और बढ़ी तो उन्हानें कहा कि रिजर्व बैंक की रिपोट है जिसे आप असत्य नही कह सकते तथा मैं यह बात लम्बे समय से बोलता हूँ परन्तु किसी ने प्रतिवाद नही किया।

इसी चैनल पर महिलाओं के अधिकार विषय पर बोलते हुए मैने कहा कि भारत में कुल मिलाकर आठ दस लाख ही महिलाऍ हैं। शेष तो किसी न किसी परिवार की सदस्य होने से वे मॉ बहन बेटी पत्नी तो हो सकती हैं किन्तु महिला नहीं हो सकती क्योंकि परिवार में सम्मिलित होने के बाद उसके प्रत्येक सदस्य के मौलिक अधिकार ही व्यक्तिगत होते है। अन्य सभी सामाजिक तथा संवैधानिक अधिकार तो परिवार में विलीन होने के कारण सामूहिक हो जाते है, पृथक–पृथक रहते ही नही। बहस में अन्य प्रतिभागियों के प्रतिवाद पर मैने स्पष्ट किया कि किसी भी मौलिक अधिकार में कही भी महिला पुरुष का भेद नही है। वह तो प्रत्येक व्यक्ति के लिये समान होता है। फिर भी मेरे कथन का भरपूर विरोध हुआ ,किन्तु कोई अलग से आंकड़ा पेश नही किया गया कि मेरे आंकड़े गलत हैं।

हम इन तीनों आंकड़ो की समीक्षा करें। पहले ऑकड़े में डब्लू एच ओ का हवाला दिया गया है । मुझे पता नही कि यह वास्तव में ऐसी ही गलत रिर्पोट है या प्रस्तुत कर्ता की भूल है। इसी रिर्पोट का दूसरा भाग कहता है कि पूरी दुनिया में कुल मिलाकर बारह करोड़ दस लाख लोग डिप्रेशन के शिकार होते है। अब यदि हम भारत की ही कुल आबादी को एक सौ बीस करोड़ माने तो अकेले भारत में ही पैंतीस प्रतिशत या एक तिहाई के अनुसार चालीस बयालीस करोड़ डिप्रेशन के मरोज होने चाहिए जबकि उनकी सम्पूर्ण विश्व की संख्या ही बारह करोड़ है। आंकड़ो में कहॉ भूल है यह पता नही किन्तु भूल तो हुई है अवश्य।

इसी समाचार मे यह निषकर्ष भी निकाला गया है कि डिप्रेशन के लिये महंगाई, आर्थिक तंगी, हिंसा,और सामाजिक समस्याऍ जिम्मेदार है। यह पूरी की पूरी बात पूरी तरह असत्य है । डिप्रेशन से इनका कोई संबंध नही क्योकि मंहगाई और आर्थिक तंगी तो है ही नही । हिंसा का वातावरण डिप्रेशन पैदा नही करता । सामाजिक समस्याए भी बहुत घटी है। फिर भी पता नही क्यों ऐसी असत्य बाते निषकर्ष

के तौरपर पूरे देश मे फैलायी जा रही है। यदि ये बाते किसी विश्व व्यापी संगठन ने भी कही है तो असत्य तो हमेशा असत्य ही होगा। भले ही उसे भगवान भी क्यो न कहे। इसी समाचार मे आगे लिखा है कि डिप्रेशन के कुल रोगियों में से करीब पंद्रह प्रतिशत तक आत्महत्या कर लेते हैं। अब समाचार के अगले भाग से जोड़े तो पूरी दुनियॉ में बारह करोंड़ मरीज है जिनमें से पंद्रह प्रतिशत आत्महत्या कर लेते हैं। तो प्रतिवर्ष पूरी दुनिया में एक करोड़ अस्सी लाख डिप्रेशन रोगी आत्महत्या करते है। दूसरी ओर कुल मरने वालों की संख्या ही साढ़े आठ लाख है जिन्होने आत्महत्या की। समझ में नही आता कि इन ऑकड़ो में भूल कहॉ है। मैंने सुना है कि संयुक्त राष्ट्र संघ के मौसम विभाग के अध्यक्ष के रुप में एक भारतीय विद्वान श्री पचोरी जी थे। उन्होने दशमलव की भूल के कारण मौसम संबंधी जो ऑकड़े प्रकाशित किये वे यथार्थ के बिल्कुल विपरोत थे। फिर भी वे आंकड़े कुछ वर्ष तक चलते रहे। धीरे–धीरे भेद खुला। उक्त भारतीय अध्यक्ष के विरुद्ध मुकदमा चलाने तक की बात आई किन्तु भारत ने जोर देकर इसे मानवीय भूल तक सोमित किया और हार थक कर कार्यवाही भूल में बदलनी पड़ी। आश्चर्य तो यह है कि एक व्यक्ति की ऐसी भूल बिना प्रति परीक्षण के संयुक्त राष्ट्र जैसी विश्वसनीय संस्था द्वारा मान्य कैसे हुई । उसी तरह यह भी विचारणीय है कि किसी विश्वसनीय समाचार पत्र द्वारा ऐसे त्रुटिपूर्ण ऑकड़े बिना परीक्षण के प्रकाशित ही कैसे हो गये । क्योकि ऐसे आकडे दूर–दूर तक प्रमाण स्वरुप काम आते है। भले ही वह विश्व संगठनों अथवा रिजर्व बैंक के समान विश्वसनीय न हो किन्तु अन्य सामान्य सूचना माध्यमों की अपेक्षा अधिक विश्वसनीय तो है ही।

हम दत्त जी के महॅगाई संबंधी आंकड़ो की समीक्षा करें। दत्त जी द्वारा महॅगाई संबंधी दिये गये ऑकड़े पूरी तरह असत्य है। भारत में स्वतंत्रता के बाद से अब तक लगभग पचहत्तर गुनी ही मुद्रा का अवमूल्यन हुआ है जिसका सीधा सा अर्थ है कि कुल औसत मूल्य वृद्धि पचहत्तर गुने के आसपास ही संभव है। कोई एक वस्तु तो इससे कम या ज्यादा भी महॅगी हो सकती है किन्तु वह औसत नही होने से हम उसे कुल महॅगाई शब्द के साथ जोड़ सकते ।जैसे भारत में डीजल ,पेट्रोल,बिजली समूह करीब एक सौ पच्चास गुना महंगा हुआ है।अंडा मांस भी सा से अधिक गुना बढ़ा है किन्तु सब प्रकार के अनाजों की मूल्य वृद्धि चालीस गुना के करीब ही है। दूध और शक्कर भी पचास से पचपन गुना के पास ही है। इलेक्ट्रानिक गुडस रेडियों, घड़ी,फाउन्टेन पेन, अखबार आदि तो शायद बढ़े ही नही। सबका औसत है पचहत्तर। ऐसा लगता है कि हमारे विद्वान अर्थशास्त्री दत्त जी ने या तो शून्य संबंधी भूल से चालीस को चार सौ पढ़ लिया अथवा आर.बी.आई.के ऑकड़े में ही शून्य संबंधी कोई भूल हुई होगी।वैसे ज्यादा संभावना आर.बी.आई.के ऑकड़े छपने में ही दिखती है क्योंकि जिस तरह महॅगाई घटने के बाद भी सभी विद्वान एक स्वर से महॅगाई का होना स्वीकार और प्रचार करते है उससे लगता है कि सब लोग तो ऐसी भूल नहीं किये होंगे।

वहॉ दत्त जी ने यह भी बताया कि भारत के औसत व्यक्ति की दैनिक आय भी अधिकतम स्वतंत्रता के बाद सौ गुना ही बढ़ पाई है। सच्चाई इससे बिल्कुल अलग है। भारत के चालीस करोड़ नीचे के लोगो की औसत आय लगभग डेढ़ सौ गुनी बढ़ी है। चालीस करोड़ मध्यम वर्ग की छः सा गुनी तथा उच्च वर्ग की पॉच हजार गुनी बढ़ी है। पता नही दत्त जी सरीखे विद्वानों का औसत सौ गुना बताने का आशय क्या है तथा उनका आधार क्या है।

किसी वस्तु के विनिमय का आधार कोई स्थिर वस्तु ही होती है। स्वयं चलायमान वस्तु मूल्यांकन का आधार नही हो सकती । पुराने जमानें में विनिमय का आधार स्वर्ण मुद्रा थी। स्वतंत्रता के समय चॉदी का सिक्का था। बाद में न्यूनतम श्रम मूल्य से गणना की जाने लगी । बाद में गेंहूँ को आधार मानने का प्रयास हुआ। वर्तमान में महंगाई या महंगी को मापने का आधार मूल रुपया है जो इस वर्ष पचहत्तर रुपये के करीब समतुल्य है। मूल रुपये का यह मूल्य मुद्रा स्फीति को जोड़कर प्रतिवर्ष पुनः निर्धारित होता रहता है। एक वर्ष बाद यह मूल्य अपने आप अस्सी के करीब हो सकता है। इस मूल रुपये को ही आधार मानकर आकलन करना चाहिये। न कि प्रचलित रुपये को । यदि प्रचलित रुपये को आधार मानने की भूल दत्त जी या उनके समकक्ष अर्थशास्त्री करते रहेंगे तो उन्हे मेरे जैसे जमीन से जुडे अर्थशास्त्री से भेट होने पर हमेशा ही संकट झेलने पड़ सकते हैं।

बहस में मेरी बाई ओर दत्त जी तथा दाई ओर अनुज जी थे। मैने उनसे एक प्रश्न किया कि पचास वर्ष पहले सरगुजा जिले में खेतिहर मजदूर को एक दिन के श्रम के बदले एक से डेढ़ किलो अनाज मिलता था जो आज बढ़कर प्रतिदिन छः से आठ किलो तक पहुॅच गया है। अनाज सस्ता हुआ या महॅगा? इस प्रश्न को दो तीन बार उठाने के बाद भी किसी विद्वान ने इसका उत्तर देना ठीक नहीं समझा। इसके विपरोत दत्त जी ने यह कह कर मेरी खिल्ली उड़ानी चाही कि लगता है कि आप एकाएक मंगल ग्रह से उतर कर आये हों। आंकडो की चर्चा में और वह भी आर्थिक विषय पर कटाक्ष का उपयोग अच्छा नही माना जाता। फिर भी मेरा उत्तर यही था कि मैं चाहे जिस ग्रह से आया हूँ किन्तु मुझे तो श्रम और अनाज के बीच संतुलन का उत्तर चाहिए। यदि हो तो बताइए नही तो मेरे निवास की जानकारी का मेरे प्रश्न से कोई संबंध नही।

अन्त में मैंने इस पिषय पर पस्ताव रखा कि भारत में आर्थिक विषमता बढ़ी है। चालीस करोड़ की आबादी चींटी की चाल से आगे बढ़ रही है। चालीस करोड़ मध्यम वर्ग साइकिल की गति से बढ़ रहा है तथा चालीस करोड़ उच्च वर्ग हवाई जहाज की गति से। आग तो सभी बढ़ रहे हैं किन्तु निम्न मध्यम उच्च वर्ग के बीच की दूरी लगातार बढ़ रही है। इस बढ़ती असमानता को ही भ्रमवश महंगाई कहने की प्रथा चल पड़ी है जिसे ठीक करना चाहिये। अनुज जी तो सहमत ही थे किन्तु दत्त जी इस भावना से सहमत थे, किन्तु 'शब्दों से नही। फिर भी यदि इस विषय पर किसी विद्वान का कोई विचार आता है तो हम उसका स्वागत करेंगे।

ए टू जेड में ही महिलाओं संबंधी एक भिन्न पनल में बैठकर मैने महिलाओं की संख्या आठ दस लाख तक बताई तो अन्य पैनलिस्ट उछल पड़े और 'शब्द वापस लेने का दबाव बनाने लगे।मैने कई बार उन्हें बताया कि परिवार एक संगठन है जिसमें 'शामिल होते ही पूरा परिवार एक नई इकाई का रुप ग्रहण कर लेता है। परिवार का कोई सदस्य न महिला होता है न पुरुष ।किसी सदस्य को अलग से न कोई सामाजिक अधिकार होते हैं न संवैधानिक । सारे अधिकार परिवार के सामूहिक होते हैं जो हर स्थिति में प्रत्येक सदस्य के बीच समान होते है। दुर्भाग्य से परिवार व्यवस्था के विकृत हो जाने के कारण यह असमानता हुई जो आसानी से सुधर सकती है। परिवार का कोई सदस्य बिना परिवार की सहमति ,अनुमति या स्वीकृति के किसी प्रकार की व्यक्तिगत स्वतंत्रता का उपयोग नही कर सकता । वह असहमत हो तो कभी भी परिवार छोड़ सकता है। परिवार के प्रत्येक सदस्य के लिये यह अनुशासन बंधनकारी होता है।

इसी तरह परिवार की सम्पूर्ण चल अचल सम्पत्ति में परिवार के प्रत्येक सदस्य की समान हिस्सेदारी होती है। परिवार का कोई सदस्य परिवार में रहते हुए पृथक सम्पत्ति नही रख सकता। स्वतंत्रता के तत्काल बाद नेहरु और अम्बेडकर की गलतियों के कारण परिवार की आंतरिक व्यवस्था छिन्न–भिन्न हुई । परिवार में व्यक्तिगत सम्पत्ति के स्वामित्व को संवैधानिक कर देने के दुष्प्रभाव रुप में यह पारिवारिक विकृति आई है। परिवार के प्रत्येक सदस्य को परिवार में रहते हुए समान आर्थिक सामाजिक संवैधानिक अधिकार देने के बाद किसी को किसी भी मामले में विशेष अधिकार क्यों चाहिये? चाहे वह महिला हो या पुरुष या कोई अन्य। समान अधिकार में परिवार का कोई सदस्य छेड़छाड़ करें तो आप न्यायालय द्वारा समान अधिकार भी ले सकते है तथा परिवार छोड़ भी सकते है। परिवार छोड़ने में अनेक प्रकार की रुकावटें डालने का कानून को क्या अधिकार है? परिवार के प्रत्येक सदस्य को समान अधिकार न देकर विशेष अधिकार देने की कोशिश की क्या आवश्यकता है? यदि परिवार के प्रत्येक सदस्य को पारिवारिक सम्पत्ति तथा परिवार की अपनी आंतरिक व्यवस्था के संचालन में समान सहभागिता की गारंटी दे दी जाये तो विशेष अधिकार की मॉग अपने आप दब जायेगी या ऐसी मॉग करने वाले अलग –थलग पड़ जायेंगे । समाज की दस बारह लाख अनुशासनहीन परिवार विहीन महिलाएँ जोर–शोर से स्वयं ही पचास साठ करोड़ महिलाओं का प्रतिनिधि होने का दावा करती हैं जबकि ऐसी परिवार विहोन महिलाओं को सामान्य तथा पारिवारिक महिलाओं में अधिक सम्मान से नहीं देखा जाता। ऐसी महिलाएँ कुछ मुठी भर अन्य महिलाओं को बहला फ़सलाकर उन्हें आंदोलन में जोड़ लेती हैं और नेता लोग उन्हें ही अपनी सुविधानुसार महिलाओं का प्रतिनिधि घोषित करने लगते है। इस दुखद राजनैतिक वातावरण से मुक्त होने की जरुरत है।

मेरे कथन का अन्य दो पैनलिस्ट तथा कुछ महिलाओं ने जोरदार प्रतिवाद किया। मैंने जब पूछा कि इन महिलाओं को पिता की सम्पत्ति में भी बराबर हक चाहिये और पति की सम्पत्ति में भी हिस्सा चाहिये। क्या यह न्याय संगत है? यदि पत्नो अलग होते समय अकेली आधा हिस्सा ले लेगी तो शेष आधे में से मॉ बहन पुत्रो का भरण पोषण कैसे होगा? विवाद बढता देख कर ही रामवीर सिंह जी ने सिर्फ महिलाओं के बीच मतदान कराया कि कितनी महिलाये विवाह के बाद अपने भाई और पिता को सम्पत्ति में से हिस्सा लेने का प्रावधान ठोक समझती है। सबको यह देखकर आश्चर्य हुआ कि सिर्फ दो ने ही ठीक के पक्ष में हाथ उठाये। अन्य सबने इस प्रावधान के विरूद्ध वोट दिया । मुझे भी परिणाम से आश्चर्य हुआ और मेरे विरोधियों के तो परिणाम के बाद मुँह ही लटक गयें।

आज समाज में लगातार महंगाई ,महिला अध्किार अथवा अन्य अनेक विषयों पर जोर दे देकर जो असत्य फैलाया जा रहा है उसे चुनौती देने को जरुरत है। यदि हम एक दो प्रतिशत भी प्रयास करेंगें तो अठान्नवे प्रतिशत असत्य अपने आप धराशायी हो जायेगा।अपना आत्म बल बढ़ाइये।जानकारियॉ संग्रहित करिये। चुनौती दीजिये। विजय सत्य की ही होगी।

1 श्री के0 जी0 बालकृष्ण पिल्लै, तिरुअनन्तपुरम केरल 695005

प्रश्नः—राजनीतिक दलों का सूचना के अधिकार के कानून के अंतर्गत न लाए जाने का प्रयास कहॉ तक लोकहित मे है ? राजनीतिक दल तो उस कानून से अपने को मुक्त रखना चाहेंगें। पर कुछ मानवाधिकार कर्मियों ने मॉग की है कि सूचना के अधिकार कानून राजनीतिक दलो के संबध मे भी लागू किया जाए।

कृपया इस पर अपना दष्टिकोण स्पष्ट कोजिए |

उत्तरः—भारत में आप जिन्हें राजनैतिक दल कहते हैं उनमें सें माया, मुलायम, लालू, पासवान, ममता बनर्जी,जयललिता आदि के दल दल न होकर एक–एक व्यक्ति की दुकाने हैं। दुकानदार से आप कितना सूचना के अधिकार की उम्मीद कर सकते है। कांग्रेस,भाजपा और साम्यवादी आंशिक रुप से दल है। कांग्रेस भी कहीं न कहीं परिवार वाद से उपर नही उठ रही। भाजपा धीरे–धीरे अपनी स्वतंत्र राजनैतिक छवि खोकर संघ परिवार के हाथों में जा रही हैं। साम्यवादियां से कुछ उम्मीद अवश्य थी किन्तु वह भी इस मामले में अपना मूल चरित्र खोकर इस मामले में अन्य दलों के साथ हो गये हैं। मानवाधिकार कार्यकर्ता अनेक मामलों में समाज के समक्ष समस्याएँ पैदा करते रहते हैं। विशेषकर पर्यावरण जैसे मुद्दे पर। गॉवों से 'शहरों की ओर पलायन पर्यावरण वादियों के लिये चिन्ता का विषय नहीं।किन्तु गॉवों के विकास के लिये किसी योजना से उन्हें बहुत चिन्ता होती हैं। किन्तु आर.टी.आई. के लिये मानवाधिकार वादियों ने अब तक जो लड़ाई लड़ी है अथवा अभी लड़ रहें हैं उसके लिये वे बधाई के पात्र हैं।

2 श्री धीरज लाल टांक,दुर्ग, छत्तीसगढ़

प्रश्नः— आपके द्वारा प्रेषित 27,07,2013 का अंतदशीय पत्र पाप्त हुआ है। 30 एवं 31 अगस्त को नोएडा की बैठक मे आपने आमंत्रित किया है, इस हेतु आभार। इन्ही दिनो भारतीय संस्कति ज्ञान परीक्षा का काम शालाओं मे संम्पर्क आदि का कार्य काफी तीव्रता पर होगा अतः संभव ना हो सकेगा इस हेतु क्षमा करेंगें।

राजनैतिक व्यवस्था परिवर्तन और भ्रष्टाचार निवारण हेतु आपके द्वारा जो प्रयत्न किया जा रहा है, उसकी सफलता का समय अब अति निकट आ चुका है। परिवर्तन इश्वरीय इच्छा का परिणाम है। इस हेतु संतो और सज्जनो का पुरूषार्थ भी उतना ही जरूरी है। इस हेतु प्रयास चंहु ओर हो रहे हैं। यह बात युग ऋषि पंडित श्री राम शर्मा आचार्य ने अपने उदबोधनो और साहित्य के माध्यम से अनेको बार व्यक्त किया ह। उनके द्वारा 24 वर्षो की गायत्री साधना, अनेको बार हिमालय प्रवास के दौरान अपने गुरू स्वामी सर्वेश्वरानंद जी का मार्गदर्शन एवं समस्त ऋषि संतो की सूक्ष्म चेतना से साक्षात्कार तथा उनके अभियान मे सभी ऋषि संतों की भागीदारी एवं सहयोग का आश्वासन जिस तरह से मिला है। वे सारी परिस्थितियां युग परिवर्तन के लिए मजबूर करेंगीं। आसुरी और विध्वंसक तत्वों को मुंह की खानी पडेगी और सज्जनकारी शक्तियों को बल मिलेगा। अतः दैवीय वातावरण की स्थापना अवश्यंभावी है ही। उनके द्वारा भावी परिवर्तन हेतु 3200 से ज्यादा साहित्य जो श्रेष्ठतम कोटि का सिद्ध हो चुका है, उनकी इस अतिमानवीय क्षमता को दुनिया ज्यादा दिनों तक अनदेखा नही कर सकेगी और अब वह समय भी आ रहा है जब पूरी भीड उनके साहित्य और चिंतन के शोध मे लग जायेगी।

उन्होनें एक बात कही थी, भावी परिवर्तन और समाज व्यवस्था हेतु हर व्यक्ति को अलग अलग खिचडी पकाने की जरूरत नही है। जो योजना और निर्धारण हो चुके है, वे इस साहित्य के माध्यम से जमाने के सामने रखें जा चुके हैं और इसे ही ईश्वर और महाकाल का निर्धारण माना जाना चाहिए। संवेदनशील, भावनाशील और बुद्विमानो को सचेत करने मे साहित्य पर्याप्त है, लेकिन जो जड बुद्वि अडियल और कटटर पंथों हैं उन्हें परिस्थितियॉ और प्राकतिक प्रताडना बदलने के लिए मजबूर करेंगीं और अब देवीय वातावरण को आने से कोई रोक नही सकेगा।

तात्पर्य यह है कि जमीन और आसमान की सभी श्रवणकारी शक्तियां परिर्वतन के लिए उठ रही है। युग ऋषि के साहित्य से उद्धरित एक छोटा सा अंश इस पत्र के साथ संलग्न कर भेज रहा हूँ।

उत्तर –मृत महापुरूषो के विचार यथावत समाज के समक्ष सूचनार्थ तो रखे जा सकते हैं किन्तु पालनार्थ नही। हर महापुरूष देश काल, परिस्थिति अनुसार अपने विचारों में संशोधन करता रहता है जो उस महापुरूष के मरने के बाद मार्गदर्शक विचार होता है। आज तक किसी महापुरूष न यह नही कहा कि उनके मरने के बाद भी बिना विचारे ही उनके विचारों को माना जाए क्योंकि यदि ऐसा ही मान्य सिद्धांत रहा होता तो यह बात कहने वाला स्वयं ही किसी पुराने सिद्धांत मे कोइ संशोधन नही कर पाता। कुछ लोग जो संगठन बनाने पर ज्यादा जोर देते हैं, वे ना तो महापुरूष होते हैं ना ही विचारक। इसलिए आपने जो लिखा वह सूचनार्थ मान्य है, प्रशंसनीय है किन्तु पालनार्थ हमें और नये स्वरूप मे सोचना चाहिए। यह मानना उचित नही है कि श्री राम जी शर्मा ने जो विचार दिये है वे अंतिम है। इतना अवश्य है कि उनमे से बहुत से विचार अब भी पालन करने योग्य है और जो नही है उन्हे अब नये स्वरूप मे बदलकर मानने की जरूरत है।

3 श्री राजन चौधरी, हैदराबाद आन्ध्र प्रदेश 500016

विचार–सिन्धु महानदी और सिन्धु घाटी सभ्यता बहुत प्राचीन है। जब सिकन्दर भारत तट पर आया तो उसने सिन्धु नदी का उच्चारण डिन्डूज किया। बाद मे जब तुर्क, अरब आदि आए तो उन्होंने सिन्धु महानदी को डिन्ठू दरिया वहॉ के निवासियों को भी डिंन्ठू , मिश्रित भाषा को डिन्दी तथा देश को हिन्दुस्तान नाम दिया। बाद मे जब अॅग्रेज आये तो उन्होंने सिन्धु महानदी को इण्डस रिवर, वहॉ के निवासियों को इण्डियन, देश को इण्डिया और भाषओं को वस्ताक्यूलरस नाम दिया तथा इन्हें देश–विदेश मे प्रचलित कर दिया।

बहुत देर हो चुकी है, अब तो हमे चेतना चाहिए। हमें देश को भारत, निवासियों को भारतीय तथा भाषा को भारती कहना चाहिए। इन नामो को ही देश–विदेश मे पूर्ण आस्था एवं उत्साह से प्रचलित करके अपने राष्टप्रेम का प्रमाण देना चाहिए।

कवि रामनरेश त्रिपाठी की ये पंक्तियॉ बडी प्रेरणामयी है–

देशप्रेम वह पुण्य क्षेत्र , अमल असीम त्याग से विचलित ।

आत्मा के विकास से जिसमें , मनुष्यता होती है विकसित।

समीक्षा–आपने जो सुझाव दिया है उससे मैं सहमत हूँ।जो लोग ज्यादा कुछ नही कर सकते उन्हें कम से कम इतना तो अवश्य ही करना चाहिए किन्तु जो लोग इससे बढकर कुछ करने की सामर्थ रखते हैं उन्हें इन छोटे छोटे मुददों पर ज्यादा ध्यान नही देना चाहिए।

कवि राम नरेश त्रिपाठी जी ने देश प्रेम की जो अलख जगाई वह उस समय तो ठीक थी जब भारत विदेशियों का गुलाम था। गुलामी काल मे सम्पूर्ण भारत को स्वतंत्रता संघर्ष के लिए देश भक्ति के लिए एक जुट होना चाहिए था। आज भारत राष्ट के रूप मे स्वतंत्र है किन्तु समाज के रूप मे गुलाम। आज समाज को गुलाम बनाकर रखने वाले राजनेता तथा उनके सहायक कवि, साहित्यकार, विचारक लगातार देश प्रेम राष्टभक्ति का पाठ पढा रहें हैं जबकि आज आवश्यकता इस पाठ से मुक्त होकर समाज सशक्तिकरण की है। रामनरेश त्रिपाठी जी भी वर्तमान परिस्थिति मे ऐसा ही करते या कम से कम आपका तो करना ही चाहिए |

4 सुनील तामगाडगे : 53 राधाकृष्ण नगर हुडकेश्वर रोड नागपुर महाराष्ट्

आपका पाक्षिक ज्ञानतत्व 1–15 अगस्त दि 5 अगस्त को प्राप्त हुआ। उसे पढकर मैं अपनी बात पर और भी दृढ हो गया कि आप बिना सोचे समझे, बिना छान बोन किए कुछ भी कहतें हैं, कुछ भी लिखते हैं। क्योंकि यह साफ है कि जो कुछ भी आपने कहा वह बेबुनियाद है। जैसे कि आप कहते हैं कि डॉ अम्बेडकर को वजह से जाति प्रथा बढ रही है। क्या आपको इतना भी नही पता कि दुनिया के सामने और खासकर भारत मे डॉ अम्बेडकर एकलौते शक्स थे जिन्होनें 1916 मे कहा कि जातिप्रथा भारत को मूल समस्या है। और उसके निर्मूलन के उपाय उन्होनें 1935 के जात–पात तोडक मंडल को भेजे, अपने भाषण मे बताये । पढिए उनकी कास्ट इन इंडिया और एनेहीलेशन ऑफ कास्ट।

अगर आज आपको जातिप्रथा का रूद्र रूप पूरी तरह से नही दिख रहा जो जात पंचायतों के उदाहरणों से सामने तो आ रहा है पर अभी हालत पेशवाई जैसी बदतर नही है। इस रूद्र रूप पर काबू किसी ने पाया है तो वह दयानंद सरस्वती या गॉधी नही बल्कि डॉ अम्बेडकर है। अनका बनाया मानवतावादी संविधान है। जरा आर्टिकल 17 पढें।

समता, स्वतंत्र बंधुत्व और न्याय के तत्वों को समझो जो एक साथ दुनिया के भारत छोडकर अन्य किसी भी देश के संविधान मे नही है।

आप कहतें हैं कि आर्य समाज और दयानंद सरस्वती को वजह से आपका दर्जा वैश्य से उठकर ब्राम्हण का हो गया है, लेकिन आपके बेटे अभी भी वैश्य ही हैं। कृपा करके ऐसी बात मत कोजिए और सरे आम सबके सामने तो कतई मत कोजिए। क्योंकि यह बात भारत के किसी ब्राम्हण को पता चल गई तो वह नाथूराम बनकर आपको गॉधी जैसे ही मौत दे देगा। क्योकि मेरा अध्ययन है कि ये विदेशी आर्य जन्मजात बराबर है । ये किसी को नही छोडते और किसी के नही होते। कृपया इस बात पर गौर करें और ब्राम्हण बनने का ढोंग छोड ही दे तो बेहतर।

आपस एक नम्र विनती है कि मानव जाति को एकता बनी रहे ऐसा करें, मानव जाति का आपसी भेद समाप्त हो ऐसा काम करें वैसा ही प्रचार भी करें। आपको मरा साप्ताहिक मिलता ही होगा। आशा है कि उसे पढकर आप मेरे भी मौलिक विचारों पर गौर करे उन्हें समझें और जीवन के इस अंतिम पडाव मे जीवन मे अपनाएँ।

समीक्षा –– अच्छा हुआ कि आपने समय रहते सतर्क कर दिया। जिससे मेरा भी हाल गॉधी सरीखा ना हो। आपका आभारी रहूँगां। आपने कुछ लोगो को आर्य कहा। इसका अर्थ ये हुआ कि आप स्वयं को अनार्य मानते है । जबकि मै ऐसा नही मानता। मैने जीवन के प्रारंभिक काल मे ही जाति प्रथा के विरूद्ध कडा संघर्ष किया है। अब मुझे डर ब्राम्हणो से तो नही लगता है आप जैसो से जरूर लगता ह कि आप यदि स्वयं को आर्य नही मानते और मै स्वयं को मानता हूँ तो पता नही इसका निर्णय कैसे होगा फिर भी मै आपकी सलाह का ध्यान रखूंगा।

खबरें इस पखवाड़े की

जुलाई के अन्तिम पखवाड़े के प्रारंभ में ही बिहार से खबर आई कि वहॉ के एक स्कूल का मध्यान्ह भोजन खाकर सैकड़ों बच्चे बीमार हो गये जिसमें से तेइस मर भी गये। ऐसा लगा जैसे लालू प्रसाद तथा भाजपा के लोग किसी ऐसी घटना की प्रतोक्षा ही कर रहे हो। घटना को बारह घंटे भी नही बोते थे कि नगर बन्द, बिहार बन्द,तोड़फोड़, पुतला दहन और सरकारी गाड़ियो में आग लगाने का क्रम शुरु हो गया। ऐसा लगा जैस सभी दलों के पास एक गुण्डा ब्रिगेड हमेशा तैयार रहती है जो किसी भी घटना के समय स्थानीय तथा कथित कार्यकताओं की सहायता को पहुँच जाती है। लूटपाट आगजनी में इन गुण्डों को कुछ माल तो मिल ही जाता है। चूँकि सभी दलों की अपनी –अपनी बिग्रेड होती है इसलिए कोई भी दल इस गुण्डा बिग्रेड को रोकने के लिये कोई सार्थक पहल नही कर पाता।

बिहार में मौत का वास्तविक कारण वहॉ के प्राचार्य की लापरवाही थी जिसने अपने पति की दुकान से खरीदे गये तेल में या उसकी जगह सब्जी में कीटनाशक डाल दिया।दर्भाग्य से वह महिला वहॉ के लालू पार्टी के स्थानीय दबंग नेता की पत्नी थी। लालू के आक्रमण से घबराये नितिश कुमार ने बिना जॉच पूरी हुए ही उक्त नेता की प्राचार्य पत्नी पर जानबूझकर की गई हत्या का मुकदमा दायर कर दिया। संभव है कि लालू जी कुछ रुककर यह बन्द या आन्दोंलन करते तो आज उनकी इतनी थू–थू नहीं होती किन्तु लालू जी संतुष्ट हैकि कोई न तो इतना याद रखता है न ही ऐसी बातों की तह तक कोई जाता है। सच्चाई चाहे जो हो इस बात से मीडिया को भी कोई खास मतलब नही।

इस समय तो मीडिया नितिश विरोध का झंडा उठाये हुए है। यह भी सच है कि मीडिया सर्वाधिक प्रभावशाली है। यह भी सच है कि मीडिया ने इस कार्य को पूरी तरह व्यवसाय बना लिया है। व्यवसाय प्रचार पर अधिक निर्भर है। मीडिया के माध्यम से राजनीतिज्ञों को प्रचार–प्रसार मिलता है जिसके लिये उन्हें मीडिया के व्यावसायिक हित पूरे करने पडते हैं। किसी टी0 बी0 चैनल द्वारा किसी एक खबर को दबाने के लिये सौ करोड की सौदेबाजी तक की घटना हो चुकी है । नीतिश कुमार और प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह मीडिया के व्यावसायिक हित पूरे करने में सर्वाधिक कमजोर माने जात हैं। यह भी एक कारण है कि मीडिया पूरी तरह इन दोंनो के खिलाफ रहता है।

बिहार में तेइस बच्चे मरे यह सही है। घटना स्पष्टतः गंभीर लापरवाही की है जिसके लिये सम्बद्ध लोगों को गंभीर दण्ड मिलना चाहिये। किन्तु घटना ऐसी नही लगती कि जान बूझकर षड़यंत्र पूर्वक हत्या की गई हो । फिर भी लालू नीतिश के झगड़े में इस लापरवाही को हत्या का नाम दिया गया। इसका दोष लालू को अधिक और नीतिश को कम जाता है क्योंकि लालू प्रसाद ने कुछ क्रिया की जिसकी प्रतिक्रिया में नीतिश ने ऐसा किया। लालू ऐसे–ऐसे गलत कामों को गलत नही मानते क्योंकि मीडिया उनके साथ है। यदि लालू जरा भी संवेदनशील होते तो इसके पूर्व एक युवक की हत्या की अफवाह पर सारे बिहार में आन्दोलन कराया गया ,लूटपाट हुई,पुलिस गोली से प्रदशन कारी मरे भी घायल भी हुए और अन्त में लड़का दिल्ली में जीवित मिला किन्तु लालू या मीडिया ने कभी बिना बात टफवाह को तूल देने के लिये कभी क्षमा नही मॉगी । लालू के इस तरह के बार –बार व्यवहार की निन्दा होनी चाहिये किन्तु न समाज में इतनी जागरुकता है न समाज की दीर्घकालिक याद दाश्त । इसी का लाभ उठाकर ऐसे लोग मीडिया को मैनेज करते हैं और बोच में पिसते है।

इस पखवाडे एक और महत्वपूर्ण धटना घटी कि मंत्रिमंड़ल ने परिवार में महिलाओं को अधिक अधिकार देते हुए परिवारों को और अधिक टूटने की परिस्थितियॉ बना दी । यद्यपि यह कानून मंत्रिमंड़ल से ही बना है, संसद से नही । किन्तु इस चर्चा ने समाज में एक हलचल तो पैदा कर दी है । मंत्रिमंड़ल के निर्णय के अनुसार विवाहित स्त्री को तलाक के समय पति की आधी संम्पत्ति तथा पति की पैतृक संम्पत्ति से भी समान हिस्सा मिलेगा। कानून बनाने वालो ने यह नही सोचा कि पति की मॉ का क्या होगा,पिता का क्या होगा परिवार के अन्य सदस्या का क्या होगा । मंत्रिमंड़ल के लोग भी अच्छी तरह जानते है कि यह कानून संसद से पारित नही हो सकेगा। किन्तु सोनिया गॉधी की जिद् तथा चुनावों में महिलाओं पर पड़ते प्रभाव का आकंलन करके इस प्रस्ताव को पास कर दिया । मंत्रिमंड़ल को भी यह महसूस हुआ कि इस कान्न का अगर एक अश भी पारित हो जाता है तो भारत में विवाह होना ही बन्द हो जायेगा। लिभ इन रिलेशन शिप ही महत्वपूर्ण हो जायेगा।न परिवार बनेगें न परिवार व्यवस्था रहेगी।

भारत में परिवार व्यवस्था न रहे इसका प्रयास स्वतंत्रता के बाद लगातार होता रहा है, परिवार व्यवस्था के पक्ष में एक मात्र संघ परिवार रहा ,किन्तु उसने भी परिवार व्यवस्था के विकृत स्वरुप में संशोधन करने का कभी नही सोचा। मुखियॉ का चुनाव कैसे हो ,परिवार की परिभाषा क्या हो, परिवार की सम्पत्ति में परिवार की महिला सदस्यों का क्या अधिकार हो, इस पर कभी सघ परिवारों ने भी आधुनिक तरोकों से तालमेल बैठाने का प्रयास नही किया। दुसरी ओर हमारे कानुनों ने भी परिवार को कोई साफ व्याख्या समाज के सामने नही रखी। आज तक हमें पता ही नही है कि कानुन के अनुसार परिवार का कर्ता कैसे चुना जाता है। कर्ता के क्या विशेषाधिकार होते है। सम्पत्ति में कर्ता की क्या भूमिका होती है आदि । पहली बार करोब 20 वर्ष पहले हम लोगो ने इस विषय पर लम्बा गम्भीर विचार विमर्श किया और प्राचीन तथा आधुनिक को मिलाकर परिवार को नये ढ़ग से परिभाषित किया। हमारे अनुसार परिवार एक पुंजोकृत इकाई होगा। जिसके प्रत्येक सदस्य को

परिवार में रहते हुए सम्पत्ति में समान अधिकार होगा।हमारे अनुसार परिवार में स्त्री या पुरुष का कोई भेद नही होगा और सबको समान अधिकार होगे (सम्पत्ति में भी और संचालन में भी) मेरे विचार से मंत्रिमंड़ल ने जो वर्तमान प्रस्ताव करके छेड़ छाड़ की है वह इस दृष्टि से ठीक है कि इससे परिवार व्यवस्था पर एक नयी बहस छिड़ेगी तथा जैसा हम लोग सोच रहे है उस दिशा में कुछ बात आगे बढ़गी। अर्थात यदि इन प्रस्तावों से कुछ बुरा भी होगा तो उसका अन्तिम परिणाम अच्छा निकल सकता है। फिर भी इस तरह के उलजलूल प्रस्तावों का विरोध करना चाहिए।

इसी पखवाड़े में एक सीडी जारी हुई जिसके अनुसार छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री रमन सिंह जी पर अन्य मंत्रियों के साथ करोंड़ो रुपया लेने का आरोप लगा। मुख्यमंत्री रमन सिंह हमारो उन तेरह अच्छे राजनेताओं की सूची में शामिल है जो हम लोगो ने राष्ट्रीय स्तर पर बनायी है।बहुत साथियों ने इस संबंध में प्रश्न पूछे कि यह कैसे हुआ और इसमें कितनी सच्चाई है। मैं नही कह सकता की सी0डी0 सही है या गलत लेकिन मैं इतना अवश्य कह सकता हूॅ कि देश भर में तेरह लोगो की बनायी गयी सूची में रमन सिंह का नाम होना कही से गलत नही है। मैंने जो तेरह लोंगो की सूची बनाई है उसका पैमाना ईमानदारी नही है बल्कि सबके भिन्न–भिन्न गुणों को देखकर ही वह सूची बनी है। ईमानदारी के लिए ता उसमे सिर्फ एक नाम मनमोहन सिंह का ही रखा गया है। बिहार के मुख्यमंत्री नितिश कुमार का नाम लोकतांत्रिक ढ़ग से प्रशासन चलाने के लिए रखा गया है।नरेन्द्र मोदी का नाम आसानी से समस्याओं का समाधान के लिए रखा गया है। इसी तरह रमन सिंह जी का नाम विपक्षियों से भो तालमेल स्थापित करके चलने वाले मुख्यमंत्री के रुप में रखा गया है। अन्य लोगो के नाम भी इसी तरह है। इसका यह अर्थ नही है कि ईमानदारी अथवा अन्यगुणों की पूरी तरह अनदेखो कर दी जाये, किन्तु ईमानदारी या अन्यगुणा के विषय में भारत के औसत सामाजिक स्तर से तुलना करके देखा गया है। रमन सिंह जी तथा अन्य मंत्रियों ने हो सकता है कि पैसें लिए भी हो या नही भी लिए हो ,किन्तु यदि उन्होंने पैसे लिये भी है,तब भी उनका स्थान अन्य राजनेताओं की अपेक्षा अच्छा ही है। यह भी संभव है कि सी0डी0जाली बनी हो। क्योंकि जिस देश और प्रदश में अजित जोगी सरोखे लोग राजनीति को दौड़ में शामिल हो वहॉ इस प्रकार के षड़यंत्र होना भो कोई असंभव काय नही है। मैं महसूस करता हूॅ कि इस सी0डी0 की सच्चाई जानने का मेरे लिए कोई औचित्य नही है। मैं ड़ा0 रमन सिंह को ज्यादा नजदोक से जानता हूॅ,उनको प्रशासनिक योग्यता को नजदोक से देखता हूॅ तथा उनकी विरोधियों से तालमेल करके चलने की क्षमता का भी पूरी तरह जानकार हूॅ।

इस पखवाड़े के एक अन्य घटना क्रम में बाटला हाउस इनकाउन्टर का सत्र न्यायालय द्वारा सत्य घोषित किया जाना भी एक उल्लेखनिय घटना रही ।आप सब जानते है कि भारत के अधिकांश मुसलमान वुद्धिजिवियों ने इस घटना को फर्जी सिद्ध करने के लिए एडी से चोटी तक

जोर लगाया। वामपंथी मीडिया कर्मी भी जोर –जोर से असत्य सिद्ध करने में लगे रहे। यहॉ तक कि कांग्रेस के महासचिव दिग्विजय सिंह ने भी कोई कसर बाकी नही रखी । ए0आर0 अन्तुले अथवा सलमान खुर्शीद सरोखे लोगो से तो कुछ और उम्मीद करना ही व्यर्थ था।क्योकि ये तो मुसलमान भी थे। जामिया मिलिया के धर्मनिर्पेक्ष कहे जाने वाले कुलपति नुरुल हसन भी आंशिक रुप से विचलित हुए। दूसरी ओर इस घटना को सत्य कहने वालों में मुसलमान तो कोई सामने था ही नही । भाजपा वाले वैसे ही समाज में विश्वसनीय नही रह गये है। मोडिया भी दिग्विजय सिंह सरोखे लोगो की बातों को अधिक उछाल रहा था तथा हमारे सरोखे तटस्थ लोगों के पास भी कोई प्रमाण नही था। उम्मीद थी कि न्यायालय का निर्णय आने के बाद इन्काउन्टर को फर्जी कहने वालों का मनोबल टूटेगा और सत्य कहने वालों का बढेगा, फिर भी देखा गया कि बेशर्मी को कोई शर्म नही होती है।

घटना में अपराधी सिद्ध शहजाद के परिवार वालों का कुछ कहना तो समझ में आने वाली बात है, उसके वकील भी बोले तो कोई गलत बात नही है, उसके रिश्तेदार भी कुछ सोमा तक बोल सकते है,उसके संगठन सीमी के लोग भी यदि बोले तो उनका बोलना कोई विशेष बात नही है किन्तु यदि इन सबके बाहर के मुसलमान न्यायालय के निर्णय के बाद भी यदि कुछ बोलते हे तो ऐसे लोगो के विषय में अवश्य चिन्ता होती है। पुलिस द्वारा घोषित किसी संदेहास्पद अपराधीको तटस्थ व्यक्तिया द्वारा संदेहास्पद ही मानना चाहिए तथा तब तक उस संबंध में कोई बात नही कहनी चाहिए जब तक आप को स्वयं व्यक्तिगत रूप से जानकारी न हो । न्यायालय का निर्णय आने के बाद भी दिग्विजय सिह जी ने इस घटना को इस तरह फर्जी कहना जारी रखा जैसे कि वे व्यक्तिगत रूप से स्वयं देखे हो या जानते हो । न्यायालय ने स्पष्ट लिखा है कि मोहन लाल शर्मा को सामने से छाती पर गोलियॉ लगी। न्यायालय ने यह भी लिखा है कि सहजाद उस दिन जिस टेन से भागा उस टेन का टिकट उसके नाम से प्रमाणित हो गया है, अन्य कई सबूत भी दिए गए है। इसके बाद भी दिग्विजय सिंह कह रहे है कि सहजाद वहॉ नही था और मोहन लाल शर्मा को गोली पोछे से लगी। ऐसा लगता है कि दिग्विजय सिंह को यह बताने वाले या तो उनकी नजर में बिल्कुल ही सत्यवादी हरिशचन्द्र हो अथवा उनके पक्ष में बोलने से दिग्विजय सिंह के दल को वोटो का बहुत बड़ा लाभ होने वाला हो। दिग्विजय सिह के कथन में क्या रणनीति है यह मुझे नही पता लेकिन बार–बार एसी बातें बोलने से उनकी विश्वसनीयता जो पहले ही शून्यवत है अब तो लगातार शून्य से भी नीचे जा रही है। मेरा तो सुझाव है, कि ऐसे संवेदनशील मामलों में मुसलमानों को भी कुछसोच कर बोलना चाहिए तथा दिग्विजय सिंह को तो मैं क्या सलाह दे सकता हूॅ।

एक और घटनाक्रम में इस पखवाडे आंध्रप्रदेश का विभाजन करते हुए ,तेलंगाना नाम से नया प्रदेश बनाने की स्वीकृति पर मोहर लगी। स्वाभाविक है यह निर्णय प्रशासनिक या आर्थिक दृष्टि से न होकर राजनैतिक लाभ हानि को ध्यान में रखकर किया गया। अब तेलंगाना से कांग्रेस को दस बारह सांसद बढ़ सकते है। भारतीय जनता पार्टी का कोई अस्तित्व था ही नही। वह तेलंगाना का संमर्थन करके कुछ थोड़ा लाभ पाने के चक्कर में थी अन्यथा 2004 के पूर्व जब अटल जी की सरकार थी तब भाजपा ने इस प्रस्ताव को न सिर्फ ठुकराया था बल्कि इसका विरोध भी किया था।

आश्रमो पर बढते बलातकार के आरोप

आर्य तीन प्रकार के होते है पहला वे जिन्हे मनुष्य को करना चहिए। दूसरे वे जिन्हे मनुष्य को नही करना चाहिए। तीसरे वे जिन्हे मनुष्य को नही करने दिया जायेगा। पहले प्रकार के कार्य सामाजिक कार्यो के रूप मे माने जाते है। दूसरे प्रकार के कार्य असामाजिक की श्रेणी मे आते है। तीसरे प्रकार के कार्य समाज विरोधी माने जाते है। पहले प्रकार के कार्यो को उत्तम कहा जाता है दूसरे प्रकार के कार्य अनैतिक कहे जाते है तथा तीसरे प्रकार के कार्यो को अपराध कहा जाता है।

नवीनतम घटना क्रम मे आशाराम बापु की चर्चा समाज मे आयी है जिसके अनुसार उन्होने सोल्लह वर्ष की लड़की के साथ यौन उत्पीड़न का प्रयास किया। यह घटना सच है या झूठ यह जॉच का शिष्य है किन्तु आमतौर पर साधु शंतो द्वारा गुप्त रूप से ऐसा करने का विश्वास है। काम वासना मनुष्य की प्रकृतिक भूख है; इसे विरलय लोग ही पूरी तरह रोक पाते है। यही बात साधु शंतो पर भी लागु होती है उनमे भी अपवाद स्वरूप लोग ही स्वयं को रोक पाते है। अन्यथा भारी नैतिक दबाव के बाद भी ये कोई न कोइ मार्ग निकाल लते है।यधपि ऐसे मार्ग मे बलात्कार सामिल नही होता है तथा बलात्कार की प्रकरण शायद ही कभी सुनने को मिलती हो ।

प्राचिन समय में भी आश्रमों मे ऐसा होने की बाते सुनने में आती रही है। राजा दशरथ के पुत्रों के गर्भाधान की बात हो अथवा कुंन्ति के गर्भ धारण की बात हो *अथवा* ईशु मशीह के जन्म की खोज की जाय कही न कही ऐसे धर्म स्थानो पर उगली जाकर टिकती है। ये धर्म स्थान अथवा आश्रम वेश्यालय के समान उपयोग मे नही आते थे। जहॉ काई भी स्त्री पुरूष अनावश्यक होते हुए भी अपनो वासनाओ की पूर्ती के लिए इनका उपयोग करता है। ये धर्म स्थान सिर्फ महिलाओ के लिए ही सुरक्षित होते थे। जहॉ या तो विधवाये गुप्त रूप से अपनी भूख मिटा लेती थी अथवा वे महिलाए वहॉ जाने का प्रयास करती थी जिनके पति संतान पैदा करने अक्षम होते थे अथवा यदा कदा ऐसी महिलाए भी इनका उपयोग कर लेती थी जो अपने पति से अतृप्त रहती थी।ये महिलाए ऐसे धर्म स्थानो मे बेरोक टोक आती जाती थी क्योकि किसी तरह की रोक टोक संदेह का वातावरण पैदा कर सकती थी।ऐसे स्थान धार्मिक आवरण भी ओढे रहते थे। जिससे यह व्यवस्था ब्यभीचार या व्यवसाय का रूप न ले ले।यही कारण ह कि यदा कदा ऐसी बाते सुनने के बाद भी दबा दी जाती थी अथवा अनसुनी कर दी जाती थी। आशाराम बापू की धटना पर विचार करे तो विश्वास नही होता की आशाराम बापु ने बलातकार करने की भूल कि होगी। संभव ह कि बापु भी अनेक शंतो की तरह अपनी भूख मिटाने के लिए ऐसे कुछ उपाय करते हो लेकिन बिना सहमति के दबाव डाल कर ऐसा कृत्य करना विश्वसनीय नही लगता। यह अवश्य लगता है कि उक्त लडकी सहमत नही हुयी होगी और उसे सहमत करने के लिए बापु ने हल्का फुल्का दबाव बनाने की भूल कर दी हो।सच्चाई क्या है यह तो वह लडकी और बापू ही बता सकते है।या जॉच के बाद सच्चाई सामने आ सकती है। किन्तु इतना अवश्य लगता है कि उस लड़की को आशाराम बापु के आचरण पर पहले से कुछ जानकारी रही होगी तभी वह

उनके पास जाने से कतरा रही थी। आशाराम बापु का कार्य चाहे अपराध की श्रेणी तक पहुचा हो या न पहुचा हो किन्तु वह अनैतिक तो था ही क्योंकि बिना किसी महिला की तरफ से मॉग आये उसके साथ ऐसे आचरण का प्रयत्न करना आश्रमों की गुप्त परम्परा के विपरित है।

पिछले दिनों ही ऐसी चर्चाए भगवान रजनीश के बारे में भी सुनने को मिलती रही है शीरसा वाले बाबा राम रहोम के विषय में यदा कदा ऐसी बाते सुनने जाती को मिल है बाबा रामदेव के विषय मे भी ऐसी बाते सुनने को मिल जाती है संभव है ये बाते असत्य भी हो किन्तु यदि सत्य भी हो तो जब तक वे बलात्कार की रेखा को नही छुती तबतक इनकी चर्चा करना अर्थ हीन है। समाज में ऐसे भी अनेक संगठन है जो अपने विशेष कार्यकर्ताओको इस संबंध मे कठोरता से अनुशासीत रखने का प्रयास करते है ऐसे संगठनो में राष्टोय स्वयं सेवक संघ अथवा कैथोलिक चर्चाओ को विश्वसनीय स्थान प्राप्त है। किन्तु धिरे धिरे ऐसे संगठनो में ऐसी गुप्त बाते प्रकाश में आने लगी है।मध्यप्रदेश के एक मंत्री का मामला तो खुलेआम उजागर हो गया। उनका मामला भी किसी तरह अपराध नही था।सिर्फ उसे अनैतिक कार्य की श्रेणी मे रखा जा सकता है किन्तु राजनैतिक कारणो से इस मामले को बहुत अधिक गंभीर बना दिया गया अनेक चर्चो के पादरीयो कि भी बाते प्रकाशीत हो चुकी है दोनो ही संगठन चिंतित है जब तक ये बाते गुप्त थी तब तक कोई चिंता की बात नही थी। किन्तु प्रकाश मे आने के बाद ये बाते बहुत अधिक नुकसान करती है। सब समझते है कि ये कार्य मानवीय आवश्यकता के अर्न्तगतआते है।जिनसे बचना चाहिए अथवा कम से कम प्रकाश मे आने की सतर्कता तो अवश्य बर्तनी चाहिए। फिर भी या तो भूल वश अथवा राजनैतिक प्रतिस्पर्धा के कारण ऐसी बातो को तिल का ताड बना दिया जाता है सब जानते है कि राघव जी की सी0 डी0 राजनैतिक प्रतिस्पर्धा के कारण बनी। सी0 डी0 को आवश्यकता से अधिक प्रचारीत करने में भी राजनैतिक कारण रहे।चर्चो के विषय मे भी जो बात का बतंगण बना वह कही न कही धार्मिक प्रतिस्पर्धा के साथ जुडता है अन्यथा आम तौर पर समाज ऐसे मामलो को उछालने से परहेज करता है। आशाराम बापू का मामला अधिक जोर से उछालने का कारण राजनैतिक प्रतिस्पर्धा ही है। वैसे आशाराम बापू अन्य अनेक मामलो में दूसरो की स्वस्थ्य आलोचना भी नही सुन पाते है। थोडी सी आलोचना में ही भक्तो को हिंसक हो जाने की सलाह देना उनकी आम आदत है ऐसी आदत भी कोई अच्छी बात नही है फिर भी हम तो यही कह सकते है कि यह उनका व्यक्तिगत मामला है अच्छे बुरे का परिणाम वे स्वयं भोगे गें।
मै स्पष्ट हूँ कि हर अपराधी चाहता है कि अनैतिक कार्योको भी अपराध की श्रेणी में डाल दिया जाय। ऐसा होने से अपराधी समाज मे अलग थलग नही दिखेगा।सरकार भी चाहती है कि अनैतिक कार्यो को अपराध धोषित कर दिया जाय जिससे उसकी सक्रियता बनी रहे। यह तो हम आप सब का कर्तब्य है कि हम अनैतिक और अपराध को एक साथ न जुडने दे।यदि दोनो एक साथ जुडे तो एक दो प्रतिशत अपवाद स्वरुप लोगो को छोडकर बाकी सब कही न कही इसकी चपेट मे आजाएँगे और जब सभी चेहरे दिखने लगेगें तो अपराधियो के लिए यह बहुत अच्छा अवसर होगा आवश्यकता हैकि हमसमाज में अनैतिक और अपराध का अलग अलग वर्गिकरण करने की आदत डाले। अच्छा होगा यदि हम किसी अन्य के ऐसे अनैतिक कार्य कि चर्चा करने की परहेज करे जो कहो न कही हम स्वयं करते हो और हमारी सर्तकता और चालाकी के कारण वह अब तक प्रकाश मे न आया हो। हो सकता हैकि हमारी छाटी सी असावधानी आशाराम बापू के समान ही हमारे जीवन भर के सम्मान को कलंकित कर दें।

इस संबंध में कानुनों की समीक्षा भी करनी आवश्यक है। राघव जी कार्य किसी भी रूप में अपराध की श्रेणी में नही आता । यदि वह घटना सच भी हो तब भी वह अनैतिक ही थी,अपराध नही। आनावश्क अपराध घोाित कर रखा है। अन्य अनेक आश्रमों के विाय में भी किये जाने वाले प्रचार का भी यही हाल है। कि वे घटनाएँ अनैतिक होती है,अपराध नही।आशा राम बापु की घटना में यदि थोंड़ा भी बल प्रयोग हुआ तब तो अपराध हो सकता है। अन्यथा उसे भी अनैतिक ही मानना पडेगा । यदि ऐसे मामलों में लोभ लालच भी दिया गया हो तब भो उसे अनैतिक ही मानना चाहिये क्योंकि सामाजिक दृटि से एसे मामलों में बारह से उपर को बालिग मान लिया जाता है। किन्तु बल प्रयोग किसी भी रू में क्षम्य नही हो सकता चाहें वह किसी भी बड़ें से बड़े सन्त द्वारा ही क्यों न किया गया हो। समाज का कर्तव्य है िकवह अनैतिक और अपराध को अलग –अलग समझना ‘ शुरू करें । इन सन्तों का भी कर्तव्य है कि वे मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये प्रत्यक्ष विवाह को अधिक उपयोग करने की आदत डालें जिससे उनके समक्ष ऐसे संकट न पैदा हो।